



دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA



सारांश खुतब: जुम: सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद खलीफतुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला
बिनसिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मदा 16.10.2026 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(अख़्ता महीने की तिथि 16,1405 हश)

उस्वा-ए-रसूल ﷺ क़नाअत, (संतोष, सब्र) सादगी, व मिसकीनी की रोशनी में।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 16.10.2026

محله احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

اِنَّا بَعْدَ فَاغِذٍ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ. الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. مَا لِكَ يَوْمَ الدِّينِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ. اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ. صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ.

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया: : तु कह दे कि मैं इस तब्लीग़ा पर या काम पर तुमसे कोई अज़्र नहीं मांगता और न मैं तकल्लुफ़ (बनावट) से बात करने का आदी हूँ। इस आयत में अल्लाह ताला आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐलान करवा रहा है कि लोगों में यह ऐलान कर दो कि मैं तुम्हें जो खुदा ताला का पैग़ाम पहुँचा रहा हूँ और बेहतरी के रास्ते दिखा रहा हूँ यह सिर्फ़ तुम्हारी दुनिया व आखिरत संवारने और तुम्हारे फ़ायदे के लिए है। मुझे इस काम के बदले तुमसे कुछ नहीं चाहिए और न ज़रूरत है। मुझे तो इसका अज़्र सब ख़ज़ानों के मालिक से मिल रहा है।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी इन तकल्लुफ़ात (औपचारिकता) से पाक थी और जब ज़िंदगी तकल्लुफ़ (औपचारिकता / बनावटीपन) से पाक हो तो दुनियावी ख़्वाहिशात होती ही नहीं और ज़रूरियात की चीज़ें अल्लाह ताला खुद मुहैया कर देता है। मोमिनों को भी ये नसीहतें हैं कि अपने आपको सादा रखो और तकल्लुफ़ात (औपचारिकता / बनावटीपन) से पाक करो। हज़रत उस्मान बिन अफ़फ़ान रज़ि अल्लाह अन्हु ने बयान किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इब्ने आदम के लिए कोई हक़ नहीं इन बातों के सिवा कि एक घर हो जिसमें वो रहे, इस क़दर कपड़े हों जो उसके नंग को ढाँप सकें और रूखी-सूखी रोटी और पानी हो। असल में आप स. अपना हाल और अपनी ज़िंदगी का नक्शा खींच रहे हैं कि मुझे किसी तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं है। यही वजह है कि आप स० यह दुआ किया करते थे जिस का ज़िक्र हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़िअल्लाह अन्हु ने बयान किया कि आप स० ने फ़रमाया मसाकीन से मोहब्बत किया करो, और खुद यह कहते हैं कि मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी दुआ में यह कहते सुना कि: ऐ अल्लाह मुझे मिसकीन के तौर पर ज़िंदा रखना और मिसकीन के तौर पर मौत देना और मिसकीनों के समूह में मेरा हशर करना।

हज़रत अबू उमामा रज़िअल्लाह अन्हु बयान करते हैं कि सहाबा ने आप स० के पास दुनिया का ज़िक्र किया तो आपने दो दफ़ा मुखातिब कर के तवज्जो दिलाई कि क्या तुम नहीं सुनते, यक़ीनन सादगी ईमान का हिस्सा है, यक़ीनन सादगी ईमान का हिस्सा है। हज़रत इमरान

बिन हुसैन रज़िअल्लाह अन्हु बयान करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यक़ीनन अल्लाह अपने उस बंदे से मोहब्बत करता है जो मोमिन हो, नादार हो, सवाल से बचने वाला हो और अयालदार हो। सवाल से इंसान उसी वक़्त बच सकता है जब सादगी, क़नाअत, और सब्र हो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाह अन्हुमा बयान करते हैं कि ग़रीब मुहाजरीन ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दौलतमंदों की फ़ज़ीलत की शिकायत की तो आप स० ने बशारत दी कि ग़रीब मोमिन जन्नत में अपने दौलतमंदों से निस्फ़ दिन यानी पाँच सौ साल पहले दाख़िल होंगे। रावी मूसा ने आयत पढ़ी कि- और यक़ीनन तेरे रब के पास ऐसा भी दिन है जो इस शुमार के मुताफ़िक़ जो तुम करते हो एक हज़ार बरस का है, यानी निस्फ़ दिन से मुराद पाँच सौ साल है।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: इस का यह मतलब नहीं कि इंसान हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाए और काम न करे, बल्कि पूरी तवज्जो और मेहनत से काम करना, सादा ज़िंदगी गुज़ारना, क़नाअत करना और शुक्र करना मोमिन का शिवा (स्वभाव) है जो ईमान में इज़ाफ़ा करता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाह अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे कंधे को पकड़ा और फ़रमाया कि तू दुनिया में इस तरह बसर कर गोया कि तू परदेसी है या राह चलता मुसाफ़िर। इब्र उमर रज़ि अल्लाह अन्हुमा कहते थे कि शाम हो तो सुबह का इंतज़ार न करो और जब सुबह हो तो शाम का इंतज़ार न करो, और अपनी सेहत से बीमारी के लिए और ज़िंदगी से मौत के लिए कुछ सामान ले लो।

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आप फ़रमाते थे कि मेरी तारीफ़ में मुबालगा (बढ़ा-चढ़ाकर कहना) न करो जैसे नसरानी ने इब्ने मरियम की तारीफ़ में मुबालगा किया। मैं तो सिर्फ़ अल्लाह का बन्दा हूँ और तुम यही कहो उसका बन्दा और उसका रसूल। मुतरिफ़ ने अपने वालिद से बयान किया कि हमने बनू आमेर के वफ़द में आप स० को कहा कि आप हमारे सरदार हैं तो आप स० ने फ़रमाया कि सरदार तो अल्लाह है। फिर कहा कि आप फ़ज़ल में अफ़ज़ल तरीन (सबसे श्रेष्ठ / सर्वोत्तम) और एहसान (उपकार) में अज़ीम तर हैं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अपनी बात बयान करो, यह फ़ज़ूल किस्म की तारीफ़ें न करो शैतान तुम्हें दिलेर न कर दे। हज़रत रबीअ बिनते मुअव्वज़ रज़िअल्लाह अन्हुमा बयान करती हैं कि उन की शादी पर बच्चियाँ दफ़ बजा कर शुहदाए बद्र की तारीफ़ कर रही थीं, उनमें से एक लड़की ने कहा कि हम में एक ऐसा नबी है जो जानता है कि कल क्या कुछ होगा। आप स० ने फ़रमाया कि इसको जाने दो और वही गाओ जो पहले गा रही थीं। जहाँ ग़ैर ज़रूरी तारीफ़ और शिर्क़ की बात हुई वहाँ आप स० ने फ़ौरन टोक दिया।

हुज़ूर फ़रमाते हैं कि आप स० के मकान और रिहाइश की सादगी के बारे में यूँ ज़िक्र मिलता है:- हिजरत के बाद मस्जिद नबवी के साथ दस-पंद्रह फ़ुट का छोटा सा हुजरा तैयार किया गया जिसका दरवाज़ा मस्जिद में खुलता था और वहीं से आप स० नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाते थे। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने 'सीरते खातमुन्नबीईन' में लिखा है और तारीख़ में तफ़सील है कि हज़रत हारिसन बिन नुअमान रज़िअल्लाह अन्हु के मस्जिद के आसपास में कई मकान थे। जब भी रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में नई बीवी आती तो हारिस अपना एक मकान दे देते, यहाँ तक कि हारिस के तमाम मकान रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हो गए। कुल नौ मकान थे जिनमें आप स० ने आख़िरी दस बरस बसर किए और हज़रत आयशा रज़िअल्लाह अन्हुमा के घर में तदफ़ीन हुई। ये मकान कच्ची ईंटों, गारे और खजूर की टहनियों के थे जिन पर बालों के कंबल डाले गए थे ताकि बेपर्दगी न हो। हर कमरे की लंबाई लगभग पाँच मीटर और चौड़ाई चार मीटर थी, आँगन की चौड़ाई लगभग साढ़े तीन मीटर थी और छतें इतनी बुलंदी पर थीं कि हाथ उठा कर छुआ जा सकता था। अता बयान करते हैं

कि सईद बिन मुसैब ने हुजरे गिराए जाने के दिन कहा कि अल्लाह की क़सम मैं चाहता था कि इन हुजरो को अपने हाल पर छोड़ दिया जाता ताकि लोग देखते कि आप स0 ने किस क़दर कम से कम पर इक्ताफ़ा (संतोष) फ़रमाया था। हज़रत अबू उमामा रज़ि अल्लाह अन्हु ने भी कहा कि काश इन हुजरो को छोड़ दिया जाता ताकि लोग इमारतें बनाने में कमी करते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं ख़्याल करना चाहिए कि किस इस्तिक़्लाल (दृढ़ता / स्थिरता) से आँहज़रत ﷺ अपने दावा-ए-नबुवत पर बावुजूद पैदा हो जाने हज़ारों के अव्वल से आख़िर दम तक साबित और क़ायम रहे। बरसों तक वो मुसीबतें देखीं वो दुःख उठाने पड़े जो कामयाबी से वो बकुल्ली मायूस करते थे और रोज़ बरोज़ बढ़ते जाते थे कि जिन पर सब्र करने से किसी दुनियावी मक़सद का हासिल हो जाना वहम भी नहीं गुज़रता था... फिर जब लम्बे समय के बाद ग़लबा इस्लाम का हुआ तो इन दौलत और इक़बाल के दिनों में कोई ख़ज़ाना इकट्ठा नहीं किया, कोई इमारत नहीं बनाई ... बल्कि जो कुछ आया वो सब यतीमों और मस्कीनों (गरीब) और बेवा औरतों और मक़रूज़ों की ख़बरगीरी में ख़र्च होता रहा और कभी एक वक़्त भी सैर हो कर न खाया।

हज़रत आयशा रज़िअल्लाह अन्हा के हाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर चमड़े का था जिसमें ख़जूर के रेशे भरे थे। हज़रत हफ़्सा रज़िअल्लाह अन्हा के हाँ उन का कंबल था जिसकी वो दो तहें लगाती थीं। एक रात चार तहें लगा दीं तो आप स0 ने सुबह फ़रमाया कि इसे पहले जैसा ही रहने दो क्योंकि इसकी नरमी मेरे लिए रात नमाज़ में रोक बन रही थी। इससे मुराद नींद नहीं बल्कि बिस्तर पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ने में तवाजुन (संतुलन) और इबादत का मज़ा था। हज़रत आयशा रज़िअल्लाह अन्हा बयान करती हैं कि घरों में चराग नहीं होते थे, जब आप स0 सजदा करते तो मुझे हाथ से दबाते और मैं पाँव सिकोड़ लेती और जब खड़े होते तो फैला देती। हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़िअल्लाह अन्हुमा ने बयान किया कि आप स0 चटाई पर सोए जिसने पहलू पर निशान डाल दिया, अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि अल्लाह हुन्हु रो पड़े कि किसरा और कैसर रेशम और दीबाज़ पर चलते हैं, आप स0 ने फ़रमाया मत रो उनके लिए दुनिया है और हमारे लिए आख़िरत, मेरी और दुनिया की मिसाल उस सवार की सी है जो दरख़्त के नीचे ठहरा फिर रवाना हो गया। हज़रत उमर रज़िअल्लाह अन्हु ने बाला ख़ाने में आप स0 को बोरीए पर देखा जिसके निशान पहलू पर थे और सर के नीचे ख़जूर की छाल का तकिया था, वो रो पड़े तो आप स0 ने यही फ़रमाया कि क्या तुम इस बात से ख़ुश नहीं कि उनके लिए दुनिया हो और हमारे लिए आख़िरत। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाया कि आप स0 ने फ़रमाया कि मैं तो उस मुसाफ़िर की तरह हूँ जो ऊँट पर सवार गर्मी में दरख़्त के साये में सुस्ता ले और पसीना ख़ुशक होते ही चल पड़े।

हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ि अल्लाह हुन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत पर जो तहरीर फ़रमाया उसका ख़ुलासा यँ है कि आप स0 माल की तक़सीम में इतने मोहतात (सावधान) थे कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 और हज़रत अली रज़ि0 का हक़ होने के बावजूद ख़ादिम न दिया ताकि आइंदा बादशाह अमवालुन्नास (जनता के माल) को अपने लिए जाइज़ न समझ लें। हज़रत अली रज़ि0 के मुताबिक़ हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 के जहेज़ में सिर्फ़ एक रेशमी चादर, चमड़े का गदीला जिसमें ख़जूर के रेशे थे, दो आटा पीसने की चक्कियाँ, मशकीज़ा और दो घड़े थे। हज़रत आयशा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 ने मिट्टी से कमरे की लिपाई की, ख़जूर की छाल के दो तकिए बनाए, ख़जूर, अंगूर और मीठा पानी पिलाया और फ़रमाया कि हमने हज़रत फ़ातिमा की शादी से ज़्यादा अच्छी और सादा शादी कोई नहीं देखी।

हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आखिरी उम्र में बादशाह थे मगर दुनियावी फ़ायदा कोई हासिल नहीं किया, न अपनी जायदादें घोषित कीं और न विरासत में मुंतक़िल कीं। वफ़ात के वक़्त भी आप स० की निजी जीवन के ख़र्च के लिए गिरवी रखी हुई थीं। जब माले ग़नीमत में से हज़रत फ़ातिमा रज़ि अल्लाह अन्हा ने लौंडी माँगी तो आप स० ने फ़रमाया कि ये माल मेरा नहीं ख़ुदा का है, तुम ख़ुदा का ज़िक्र किया करो और लौंडी का ख़्याल छोड़ दो। असवद रिवायत करते हैं कि हज़रत आयशा रज़िअल्लाह अन्हा ने बताया कि आप स० घर वालों के काम काज में मदद दिया करते थे और जब नमाज़ का वक़्त होता तो नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते। हज़रत हसन बिन ख़ालिद और हज़रत सवाद बिन ख़ालिद रज़िअल्लाह अन्हुमा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दीवार की मरम्मत करते देखा तो साथ हाथ बटाया। हज़रत आयशा रज़िअल्लाह अन्हा बयान करती हैं कि आप स० दूसरे इंसानों की तरह एक इंसान थे, अपने कपड़े ख़ुद साफ़ कर लेते, बकरी का दूध दोहते और अपना काम ख़ुद करते थे। कुफ़्रार कहते थे कि ये कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है, आप स० ने अहंकार से बचने के लिए शिक्षा दी और विनम्रता धारण की और हज़रत अबूहुरैरा रज़िअल्लाह अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने कोई ऐसा नबी नहीं भेजा जिसने बकरियाँ न चराई हों, और मैंने भी चन्द क़ीरात के बदले मक्का वालों की बकरियाँ चराई हैं। सूरह क़सस की आयतें 28 और 29 में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का भी उजरत पर काम करना मज़कूर है। व्याख्याकारों और सैयद ज़ैनुल आबिदीन वलीउल्लाह शाह साहब ने वज़ाहत की है कि करारीयत कीरात की जमअ है जो चार रत्ती चांदी के बराबर दरहम का हिस्सा था, यानी ये उजरत थी न कि किसी जगह का नाम, और अल्लामा बुरहानुद्दीन हलबी ने भी यही लिखा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इब्तिदाइ उम्र यतीमी और बेकसी में गुज़ारी, बकरियाँ चराई, और अंबिया के साथ गरीबी का हिस्सा इसलिए रखा गया ताकि उनमें घमंड न रहे। जंगल से गुज़रते हुए आप स० ने सहाबा को एक दरख़्त का मीठा फल खाने को कहा और बताया कि बकरियाँ चराते वक़्त मैं यह फल खाया करता था। हज़रत मुसलेह मौऊद रज़िअल्लाह फ़रमाते हैं कि रूम और ईरान की हुकूमतों के ख़त व किताबत (पत्रव्यवहार) और सफ़ीरों की आमद के बावजूद आप स० ने कोई गुलामों की जमात या नौकर न रखा बल्कि घर के काम ख़ुद करते थे। दुनिया में बादशाह होकर मिस्कीनी और दरिद्रता इख़्तियार करना और लाखों रुपया लोगों में बाँट कर घर का काम ख़ुद करना सिर्फ़ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके ख़ुदाम का ही ख़ासा (विशेषता) है।

ख़ुत्बे के आख़िर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने मज़लूम अहमदियों के लिए दुआओं की तहरीक़ फ़रमाई, जहाँ मफ़ाद परस्त और दहशत गर्द अहमदियों पर जुल्म कर रहे हैं, हुकूमती अहल्कार पुशत पनाही करते हैं और जज मुल्ला के खौफ से जमानतें नहीं लेते हैं। इसी तरह मलेशिया में भी जमाअत के ख़िलाफ़ हालात ख़राब हैं और मस्जिदों पर छापे मारे जाते हैं, अल्लाह तआला मलेशिया के अहमदियों को भी सुरक्षा और संरक्षा में रखे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مُحَمَّدٌ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيَّهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُّضِلِّهِ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيتَاءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَاذْعُوْهُ يُسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब - 18001032131